रोमियों

1 पौलुस जो यीशु मसीह का दास है,
जिसे परमेश्वर ने प्रेरित होने के लिये बुलाया, जिसे परमेश्वर के उस सुसमाचार
के प्रचार के लिए चुना गया
2 जिसकी पहले ही नबियों द्वारा पवित्र शास्त्रों में घोषणा कर दी गयी
3 जिसका सम्बन्ध पुत्र से है, जो शरीर से दाऊद का वंशज है
4 किन्तु पवित्र आत्मा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाए जाने के कारण जिसे सामर्थ्य
के साथ परमेश्वर का पुत्र दर्शाया गया है, यही यीशु मसीह हमारा प्रभु है।
5 इसी के द्वारा मुझे अनुग्रह और प्रेरिताई मिली, ताकि सभी ग़ैर यहूदियों में,
उसके नाम में वह आस्था जो विश्वास से जन्म लेती है, पैदा की जा सके।
6 उनमें परमेश्वर के द्वारा यीशु मसीह का होने के लिये तुम लोग भी बुलाये गये
हो।
7 वह मैं, तुम सब के लिए, जो रोम में हो और परमेश्वर के प्यारे हो, जो परमेश्वर
के पवित्र जन होने के लिए बुलाये गये हो, यह पत्र लिख रहा हूँ।
हमारे परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें उसका अनुग्रह
और शांति मिले।

धन्यवाद की प्रार्थना

8 सबसे पहले मैं यीशु मसीह के द्वारा तुम सब के लिये अपने परमेश्वर का
धन्यवाद करना चाहता हूँ। क्योंकि तुम्हारे विश्वास की चर्चा संसार में सब कहीं
हो रही है।
9 प्रभु जिसकी सेवा उसके पुत्र के सुसमाचार का उपदेश देते हुए मैं अपने हृदय
से करता हूँ, प्रभु मेरा साक्षी है, कि मैं तुम्हें लगातार याद करता रहता हूँ।
10 अपनी प्रार्थनाओं में मैं सदा ही विनती करता रहता हूँ कि परमेश्वर की इच्छा
से तुम्हारे पास आने की मेरी यात्रा किसी तरह पूरी हो।
11 मैं बहुत इच्छा रखता हूँ क्योंकि मैं तुमसे मिल कर कुछ आत्मिक उपहार
देना चाहता हूँ, जिससे तुम शक्तिशाली बन सको।

12 या मुझे कहना चाहिये कि मैं जब तुम्हारे बीच होऊँ, तब एक दूसरे के विश्वास
से हम परस्पर प्रोत्साहित हों।
13 भाईयों, मैं चाहता हूँ, कि तुम्हें पता हो कि मैंने तुम्हारे पास आना बार-बार
चाहा है ताकि जैसा फल मैंने ग़ैर यहूदियों में पाया है, वैसा ही तुमसे भी पा सकूँ,
किन्तु अब तक बाधा आती ही रही।
14 मुझ पर यूनानियों और ग़ैर यूनानियों, बुद्धिमानों और मूर्खों सभी का क़र्ज़
है।
15 इसीलिये मैं तुम रोमवासियों को भी सुसमाचार का उपदेश देने को तैयार हूँ।
16 मैं सुसमाचार के लिए शर्मिन्दा नहीं हूँ क्योंकि उसमें पहले यहूदी और फिर
ग़ैर यहूदी जो भी उसमें विश्वास रखता है — उसके उद्धार के लिये परमेश्वर की
सामर्थ्य है।
17 क्योंकि सुसमाचार में यह दर्शाया गया है, परमेश्वर मनुष्य को अपने प्रति
सही कैसे बनाता है। यह आदि से अंत तक विश्वास पर टिका है जैसा कि शास्त्र में
लिखा है, "धर्मी मनुष्य विश्वास से जीवित रहेगा।"

सबने पाप किया है

18 उन लोगों को जो सत्य की अधर्म से दबाते हैं, बुरे कर्मों और हर बुराई पर
स्वर्ग से परमेश्वर का कोप प्रकट होगा।
19 और ऐसा हो रहा है क्योंकि परमेश्वर के बारे में वे पूरी तरह जानते है क्योंकि
परमेश्वर ने इसे उन्हें बताया है।
20 जब से संसार की रचना हुई उसकी अदृश्य विशेषताएँ अनन्त शक्ति और
परमेश्वरत्व साफ साफ दिखाई देते हैं क्योंकि उन वस्तुओं से वे पूरी तरह जानी जा
सकती हैं, जो परमेश्वर ने रचीं। इसलिए लोगों के पास कोई बहाना नहीं।
21 यद्यपि वे परमेश्वर को जानते है किन्तु वे उसे परमेश्वर के रूप में सम्मान या
धन्यवाद नहीं देते। बल्कि वे अपने बिचारों में निरर्थक हो गये। और उनके जड़
मन अन्धेरे से भर गये।
22 वे बुद्धिमान होने का दावा करके मूर्ख ही रह गये।
23 और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशवान मनुष्यों, चिड़ियाओं,
पशुओं और साँपों से मिलती जुलती मूर्तियों में उन्होंने ढाल दिया।
24 इसलिए परमेश्वर ने उन्हें मन की बुरी इच्छाओं के हाथों सौंप दिया। वे
दुराचार में पड़ कर एक दूसरे के शरीरों का अनादर करने लगे।

25 उन्होंने झूठ के साथ परमेश्वर के सत्य का सौदा किया और वे सृष्टि के बनाने
वाले को छोड़ कर उसकी बनायी सृष्टि की उपासना सेवा करने लगे। परमेश्वर धन्य
है। आमीन।
26 इसलिए परमेश्वर ने उन्हें तुच्छ वासनाओं के हाथों सौंप दिया। उनकी स्त्रियाँ
स्वाभाविक यौन सम्बन्धों की बजाय अस्वाभाविक यौन सम्बन्ध रखने लगी।
27 इसी तरह पुरूषों ने स्त्रियों के साथ स्वाभाविक संभोग छोड़ दिया और वे
आपस में ही वासना में जलने लगे। और पुरूष परस्पर एक दूसरे के साथ बुरे कर्म
करने लगे। उन्हें अपने भ्रष्टाचार का यथोचित फल भी मिलने लगा।
28 और क्योंकि उन्होंने परमेश्वर को पहचानने से मना कर दिया सो परमेश्वर
ने उन्हें कुबुद्धि के हाथों सौंप दिया। और ये ऐसे अनुचित काम करने लगे जो नहीं
करने चाहिये थे।
29 वे हर तरह के अधर्म, पाप, लालच और वैर से भर गये। वे डाह, हत्या,
लड़ाई-झगड़े, छल-छद्म और दुर्भावना से भरे हैं। वे दूसरों का सदा अहित सोचते
हैं। वे कहानियाँ घड़ते रहते हैं।
30 वे पर निन्दक हैं, और परमेश्वर से घृणा करते हैं। वे उद्दण्ड हैं, अहंकारी हैं,
बड़बोला हैं, बुराई के जन्मदाता हैं, और माता-पिता की आज्ञा नहीं मानते।
31 वे मुढ़, वचन-भंग करने वाले, प्रेम-रहित और निर्दय हैं।
32 चाहे वे परमेश्वर की धर्मपूर्ण विधि को जानते हैं जो बताती है कि जो ऐसी
बातें करते हैं, वे मौत के योग्य हैं, फिर भी वे न केवल उन कामों को करते है,
बल्कि वैसा करनेवालों का समर्थन भी करते हैं।

2

तुम लोग भी पापी हो

1 सो, न्याय करने वाले मेरे मित्र तू चाहे कोई भी है, तेरे पास कोई बहाना नहीं
है क्योंकि जिस बात के लिये तू किसी दूसरे को दोषी मानता है, उसी से तू अपने
आपको भी अपराधी सिद्ध करता है क्योंकि तू जिन कर्मों का न्याय करता है उन्हें
आप भी करता है।
2 अब हम यह जानते हैं कि जो लोग ऐसे काम करते हैं उन्हें परमेश्वर का उचित
दण्ड मिलता है।

3 किन्तु हे मेरे मित्र क्या तू सोचता है कि तू जिन कामों के लिए दूसरों को
अपराधी ठहराता है और अपने आप वैसे ही काम करता है तो क्या तू सोचता है कि
तू परमेश्वर के न्याय से बच जायेगा।
4 या तू उसके महान अनुग्रह, सहनशक्ति और धैर्य को हीन समझता है? और
इस बात की उपेक्षा करता है कि उसकी करुणा तुझे प्रायश्चित्त की तरफ़ ले जाती
है।
5 किन्तु अपनी कठोरता और कभी पछतावा नहीं करने वाले मन के कारण
उसके क्रोध को अपने लिए उस दिन के वास्ते इकट्ठा कर रहा है जब परमेश्वर का
सच्चा न्याय प्रकट होगा।
6 परमेश्वर हर किसी को उसके कर्मों के अनुसार फल देगा।
7 जो लगातार अच्छे काम करते हुए महिमा, आदर और अमरता की खोज में
हैं, उन्हें वह बदले में अनन्त जीवन देगा।
8 किन्तु जो अपने स्वार्थीपन से सत्य पर नहीं चल कर अधर्म पर चलते हैं उन्हें
बदले में क्रोध और प्रकोप मिलेगा।
9 हर उस मनुष्य पर दुःख और संकट आएंगे जो बुराई पर चलता है। पहले
यहूदी पर और फिर ग़ैर यहूदी पर।
10 और जो कोई अच्छाई पर चलता है उसे महिमा, आदर और शांति मिलेगी।
पहले यहूदी को और फिर ग़ैर यहूदी को
11 क्योंकि परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता।
12 जिन्होंने व्यवस्था को पाये बिना पाप किये, वे व्यवस्था से बाहर रहते हुए
नष्ट होंगे। और जिन्होंने व्यवस्था में रहते हुए पाप किये उन्हें व्यवस्था के अनुसार
ही दण्ड मिलेगा।
13 क्योंकि वे जो केवल व्यवस्था की कथा सुनते हैं परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी
नहीं है। बल्कि जो व्यवस्था पर चलते है वे ही धर्मी ठहराये जायेंगे।
14 सो जब ग़ैर यहूदी लोग जिनके पास व्यवस्था नहीं है स्वभाव से ही व्यवस्था
की बातों पर चलते हैं तो चाहे उनके पास व्यवस्था नहीं है तो भी वे अपनी व्यवस्था
आप हैं।
15 वे अपने मन पर लिखे हुए, व्यवस्था के कर्मों को दिखाते हैं। उनका विवेक
भी इसकी ही साक्षी देता है और उनका मानसिक संघर्ष उन्हें अपराधी बताता है या
निर्दोष कहता है।

16 ये बातें उस दिन होंगी जब परमेश्वर मनुष्य की छूपी बातों का, जिसका मैं
उपदेश देता हूँ उस सुसमाचार के अनुसार यीशु मसीह के द्वारा न्याय करेगा।

यहूदी और व्यवस्था

17 किन्तु यदि तू अपने आप को यहूदी कहता है और व्यवस्था में तेरा विश्वास
है और अपने परमेश्वर का तुझे अभिमान है
18 और तू उसकी इच्छा को जानता है और उत्तम बातों को ग्रहण करता है,
क्योंकि व्यवस्था से तुझे सिखाया गया है,
19 तू यह मानता है कि तू अंधों का अगुआ है, जो अंधेरे में भटक रहे हैं उनके
लिये तू प्रकाश है,
20 अबोध लोगों को सिखाने वाला है, बच्चों का उपदेशक है क्योंकि व्यवस्था
में तुझे साक्षात् ज्ञान और सत्य ठोस रूप में प्राप्त है,
21 तो तू जो औरों को सिखाता है, अपने को क्यों नहीं सिखाता। तू जो चोरी
नहीं करने का उपदेश देता है, स्वयं चोरी क्यों करता है?
22 तू जो कहता है व्यभिचार नहीं करना चाहिये, स्वयं व्यभिचार क्यों करता
है? तू जो मूर्तियों से घृणा करता है मन्दिरों का धन क्यों छीनता है?
23 तू जो व्यवस्था का अभिमानी है, व्यवस्था को तोड़ कर परमेश्वर का निरादर
क्यों करता है?
24 "तुम्हारे कारण ही ग़ैर यहूदियों में परमेश्वर के नाम का अपमान होता है?"
जैसा कि शास्त्र में लिखा है।
25 यदि तुम व्यवस्था का पालन करते हो तभी ख़तने का महत्व है पर यदि तुम
व्यवस्था को तोड़ते हो तो तुम्हारा ख़तना रहित होने के समान ठहरा।
26 यदि किसी का ख़तना नहीं हुआ है और वह व्यवस्था के पवित्र नियमों पर
चलता है तो क्या उसके ख़तना रहित होने को भी ख़तना न गिना जाये?
27 वह मनुष्य जिसका शरीर से ख़तना नहीं हुआ है और जो व्यवस्था का पालन
करता है, तुझे अपराधी ठहरायेगा। जिसके पास लिखित व्यवस्था का विधान है,
और जिसका ख़तना भी हुआ है, और जो व्यवस्था को तोड़ता है,
28 जो बाहर से ही यहूदी है, वह वास्तव में यहूदी नहीं है। शरीर का ख़तना
वास्तव में ख़तना नहीं है।

29 सच्चा यहूदी वही है जो भीतर से यहूदी है। सच्चा ख़तना आत्मा द्वारा मन
का ख़तना है, न कि लिखित व्यवस्था का। ऐसे व्यक्ति की प्रशंसा मनुष्य नहीं
बल्कि परमेश्वर की ओर से की जाती है।

3

1 सो यहूदी होने का क्या लाभ या ख़तने का क्या मूल्य?
2 हर प्रकार से बहुत कुछ। क्योंकि सबसे पहले परमेश्वर का उपदेश तो उन्हें
ही सौंपा गया।
3 यदि उनमें से कुछ विश्वासघाती हो भी गये तो क्या है? क्या उनका
विश्वासघातीपन परमेश्वर की विश्वासपूर्णता को बेकार कर देगा?
4 निश्चय ही नहीं, यदि हर कोई झूठा भी है तो भी परमेश्वर सच्चा ठहरेगा।
जैसा कि शास्त्र में लिखा है:

"ताकि जब तू कहे तू उचित सिद्ध हो
और जब तेरा न्याय हो, तू विजय पाये।" भजन संहिता *51:4*

5 सो यदि हमारी अधार्मिकता परमेश्वर की धार्मिकता सिद्ध करे तो हम क्या
कहें? क्या यह कि वह अपना कोप हम पर प्रकट करके अन्याय नहीं करता? (मैं
एक मनुष्य के रूप में अपनी बात कह रहा हूँ।)
6 निश्चय ही नहीं, नहीं तो वह जगत का न्याय कैसे करेगा।
7 किन्तु तुम कह सकते हो: "जब मेरी मिथ्यापूर्णता से परमेश्वर की सत्यपूर्णता
और अधिक उजागर होती है तो इससे उसकी महिमा ही होती है, फिर भी मैं दोषी
करार क्यों दिया जाता हूँ?"
8 और फिर क्यों न कहे: "आओ! बुरे काम करें ताकि भलाई प्रकट हो।"
जैसा कि हमारे बारे में निन्दा करते हुए कुछ लोग हम पर आरोप लगाते हैं कि हम
ऐसा कहते हैं। ऐसे लोग दोषी करार दिये जाने योग्य है। वे सभी दोषी हैं।

कोई भी धर्मी नहीं

9 तो फिर हम क्या कहें? क्या हम यहूदी ग़ैर यहूदियों से किसी भी तरह अच्छे
है, नहीं बिल्कुल नहीं। क्योंकि हम यह दर्शा चुके है कि चाहे यहूदी हों, चाहे ग़ैर
यहूदी सभी पाप के वश में हैं।
10 शास्त्र कहता है:

"कोई भी धर्मी नहीं, एक भी!
11 कोई समझदार नहीं, एक भी!
कोई ऐसा नहीं, जो प्रभु को खोजता!
12 सब भटक गए,
वे सब ही निकम्मे बन गए,
साथ-साथ सब के सब, कोई भी यहाँ पर दया तो दिखाता नहीं, एक भी नहीं!"
भजन संहिता *14:1-3*

13 "उनके मुँह खुली कब्र से बने हैं,
वे अपनी जीभ से छल करते हैं।" भजन संहिता *5:9*

"उनके होठों पर नाग विष रहता हैं।" भजन संहिता *140:3*

14 "शाप से कटुता से मुँह भरे रहते है।" भजन संहिता *10:7*

15 "हत्या करने को वे हरदम उतावले रहते है।
16 वे जहाँ कहीं जाते नाश ही करते हैं, संताप देते हैं।
17 उनको शांति के मार्ग का पता नहीं।" यशायाह *59:7-8*

18 "उनकी आँखों में प्रभु का भय नहीं है।" भजन संहिता *36:1*

19 अब हम यह जानते हैं कि व्यवस्था में जो कुछ कहा गया है, वह उन को सम्बोधित है जो व्यवस्था के अधीन हैं। ताकि हर मुँह को बन्द किया जा सके और सारा जगत परमेश्वर के दण्ड के योग्य ठहरे।
20 व्यवस्था के कामों से कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के सामने धर्मी सिद्ध नहीं हो सकता। क्योंकि व्यवस्था से जो कुछ मिलता है, वह है पाप की पहचान करना।

परमेश्वर मनुष्यों को धर्मी कैसे बनाता है

21 किन्तु अब वास्तव में मनुष्य के लिये यह दर्शाया गया है कि परमेश्वर व्यवस्था के बिना ही उसे अपने प्रति सही कैसे बनाता है। निश्चय ही व्यवस्था और नबियों ने इसकी साक्षी दी है।

22 सभी विश्वासियों के लिये यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा परमेश्वर की
धार्मिकता प्रकट की गयी है बिना किसी भेदभाव के।
23 क्योंकि सभी ने पाप किये है और सभी परमेश्वर की महिमा से रहित है।
24 किन्तु यीशु मसीह में सम्पन्न किए गए अनुग्रह के छुटकारे के द्वारा उसके
अनुग्रह से वे एक सेंतमेत के उपहार के रूप में धर्मी ठहराये गये हैं।
25 परमेश्वर ने यीशु मसीह को, उसमें विश्वास के द्वारा पापों से छुटकारा दिलाने
के लिये, लोगों को दिया। उसने यह काम यीशु मसीह के बलिदान के रूप में किया।
ऐसा यह प्रमाणित करने के लिए किया गया कि परमेश्वर सहनशील है क्योंकि उसने
पहले उन्हें उनके पापों का दण्ड दिये बिना छोड़ दिया था।
26 आज भी अपना न्याय दर्शाने के लिए कि वह न्यायपूर्ण है और न्यायकर्ता
भी है, उनका जो यीशु मसीह में विश्वास रखते हैं।
27 तो फिर घमण्ड करना कहाँ रहा? वह तो समाप्त हो गया। भला कैसे? क्या
उस विधि से जिसमें व्यवस्था जिन कर्मों की अपेक्षा करती है, उन्हें किया जाता है?
नहीं, बल्कि उस विधि से जिसमें विश्वास समाया है।
28 कोई व्यक्ति व्यवस्था के कामों के अनुसार चल कर नहीं बल्कि विश्वास
के द्वारा ही धर्मी बन सकता है।
29 या परमेश्वर क्या बस यहूदियों का है? क्या वह ग़ैर यहूदियों का नहीं है?
हाँ वह ग़ैर यहूदियों का भी है।
30 क्योंकि परमेश्वर एक है। वही उनको जिनका उनके विश्वास के आधार पर
ख़तना हुआ है, और उनको जिनका ख़तना नहीं हुआ है उसी विश्वास के द्वारा,
धर्मी ठहरायेगा।
31 सो क्या, हम विश्वास के आधार पर व्यवस्था को व्यर्थ ठहरा रहे है? निश्चय
ही नहीं। बल्कि हम तो व्यवस्था को और अधिक शक्तिशाली बना रहे हैं।

4

इब्राहीम का उदाहरण

1 तो फिर हम क्या कहें कि हमारे शारीरिक पिता इब्राहीम को इसमें क्या मिला?
2 क्योंकि यदि इब्राहीम को उसके कामों के कारण धर्मी ठहराया जाता है तो
उसके गर्व करने की बात थी। किन्तु परमेश्वर के सामने वह वास्तव में गर्व नहीं
कर सकता।

3 पवित्र शास्त्र क्या कहता है? "इब्राहीम ने परमेश्वर में विश्वास किया और वह
विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना गया।"✡
4 काम करने वाले को मज़दूरी देना कोई दान नहीं है, वह तो उसका अधिकार
है।
5 किन्तु यदि कोई व्यक्ति काम करने की बजाय उस परमेश्वर में विश्वास करता
है, जो पापी को भी छोड़ देता है, तो उसका विश्वास ही उसके धार्मिकता का कारण
बन जाता है।
6 ऐसे ही दाऊद भी उसे धन्य मानता है जिसे कामों के आधार के बिना ही
परमेश्वर धर्मी मानता है। वह जब कहता है:

7 "धन्य हैं वे जिनके व्यवस्था रहित
कामों को क्षमा मिली और
जिनके पापों को ढक दिया गया!
8 धन्य है वह पुरुष जिसके पापों
को परमेश्वर ने गिना नहीं हैं!" भजन संहिता *32:1-2*

9 तब क्या यह धन्यपन केवल उन्हीं के लिये है जिनका ख़तना हुआ है, या
उनके लिए भी जिनका ख़तना नहीं हुआ। (हाँ, यह उन पर भी लागू होता है
जिनका ख़तना नहीं हुआ) क्योंकि हमने कहा है इब्राहीम का विश्वास ही उसके
लिये धार्मिकता गिना गया।
10 तो यह कब गिना गया? जब उसका ख़तना हो चुका था या जब वह बिना
ख़तने का था। नहीं ख़तना होने के बाद नहीं बल्कि ख़तना होने की स्थिति से
पहले।
11 और फिर एक चिन्ह के रूप में उसने ख़तना ग्रहण किया। जो उस विश्वास
के परिणामस्वरूप धार्मिकता की एक छाप थी जो उसने उस समय दर्शाया था जब
उसका ख़तना नहीं हुआ था। इसलिए वह उन सभी का पिता है जो यद्यपि बिना
ख़तने के हैं किन्तु विश्वासी है। (इसलिए वे भी धर्मी गिने जाएँगे)
12 और वह उनका भी पिता है जिनका ख़तना हुआ है किन्तु जो हमारे पूर्वज
इब्राहीम के विश्वास का जिसे उसने ख़तना होने से पहले प्रकट किया था, अनुसरण
करते है।

✡ **4:3:** □□□□□□ □□□□□□□□ 15:6

विश्वास और परमेश्वर का वचन

13 इब्राहीम या उसके वंशजों को यह वचन कि वे संसार के उत्तराधिकारी होंगे,
व्यवस्था से नहीं मिला था बल्कि उस धार्मिकता से मिला था जो विश्वास के द्वारा
उत्पन्न होती है।
14 यदि जो व्यवस्था को मानते है, वे जगत के उत्तराधिकारी हैं तो विश्वास का
कोई अर्थ नहीं रहता और वचन भी बेकार हो जाता है।
15 लोगों द्वारा व्यवस्था का पालन नहीं किये जाने से परमेश्वर का क्रोध उपजता
है किन्तु जहाँ व्यवस्था ही नहीं है वहाँ व्यवस्था का तोड़ना ही क्या?

16 इसलिए सिद्ध है कि परमेश्वर का वचन विश्वास का फल है और यह सेंतमेत में
ही मिलता है। इस प्रकार उसका वचन इब्राहीम के सभी वंशजों के लिए सुनिश्चित
है, न केवल उनके लिये जो व्यवस्था को मानते हैं बल्कि उन सब के लिये भी जो
इब्राहीम के समान विश्वास रखते है। वह हम सब का पिता है।
17 शास्त्र बताता है, "मैंने तुझे (इब्राहीम) अनेक राष्ट्रों का पिता बनाया।"✡
उस परमेश्वर की दृष्टि में वह इब्राहीम हमारा पिता है जिस पर उसका विश्वास है।
परमेश्वर जो मरे हुए को जीवन देता है और जो नहीं है, जो अस्तित्व देता है।

18 सभी मानवीय आशाओं के विरुद्ध अपने मन में आशा सँजोये हुए इब्राहीम ने
उसमें विश्वास किया, इसलिए वह कहे गये के अनुसार अनेक राष्ट्रों का पिता बना।
"तेरे अनगिनत वंशज होंगे।"✡
19 अपने विश्वास को बिना डगमगाये और यह जानते हुए भी कि उसकी देह
सौ साल की बूढ़ी मरियल हो चुकी है और सारा बाँझ है,
20 परमेश्वर के वचन में विश्वास बनाये रखा। इतना ही नहीं, विश्वास को और
मज़बूत करते हुए परमेश्वर को महिमा दी।
21 उसे पूरा भरोसा था कि परमेश्वर ने उसे जो वचन दिया है, उसे पूरा करने में
वह पूरी तरह समर्थ है।
22 इसलिए, "यह विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना गया।"✡
23 शास्त्र का यह वचन कि विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना गया, न केवल
उसके लिये है,

✡ **4:17:** □□□□□□ □□□□□□□□ 17:5 ✡ **4:18:** □□□□□□ □□□□□□□□ 15:5
✡ **4:22:** □□□□□□ □□□□□□□□ 15:6

24 बल्कि हमारे लिये भी है। परमेश्वर हमें, जो उसमें विश्वास रखते हैं, धार्मिकता
स्वीकार करेगा। उसने हमारे प्रभु यीशु को फिर से जीवित किया।
25 यीशु जिसे हमारे पापों के लिए मारे जाने को सौंपा गया और हमें धर्मी बनाने
के लिए मरे हुओं में से पूनःजीवित किया गया।

5

परमेश्वर का प्रेम

1 क्योंकि हम अपने विश्वास के कारण परमेश्वर के लिए धर्मी हो गये है, सो
अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमारा परमेश्वर से मेल हो गया है।
2 उसी के द्वारा विश्वास के कारण उसकी जिस अनुग्रह में हमारी स्थिति है, उस
तक हमारी पहुँच हो गयी है। और हम परमेश्वर की महिमा का कोई अंश पाने की
आशा का आनन्द लेते हैं।
3 इतना ही नहीं, हम अपनी विपत्तियों में भी आनन्द लेते हैं। क्योंकि हम जानते
हैं कि विपत्ति धीरज को जन्म देती है।
4 और धीरज से परखा हुआ चरित्र निकलता है। परखा हुआ चरित्र आशा को
जन्म देता है।
5 और आशा हमें निराश नहीं होने देती क्योंकि पवित्र आत्मा के द्वारा, जो हमें
दिया गया है, परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदय में उँडेल दिया गया है।
6 क्योंकि हम जब अभी निर्बल ही थे तो उचित समय पर हम भक्तिहीनों के
लिए मसीह ने अपना बलिदान दिया।
7 कुछही लोग किसी मनुष्य के लिए अपना प्रण त्गाने तैय्यार हो जाते है, चाहे
वो भक्त मनुष्य क्यों न हो।
8 पर परमेश्वर ने हम पर अपना प्रेम दिखाया। जब कि हम तो पापी ही थे, किन्तु
यीशु ने हमारे लिये प्राण त्यागे।
9 क्योंकि अब जब हम उसके लहू के कारण धर्मी हो गये है तो अब उसके
द्वारा परमेश्वर के क्रोध से अवश्य ही बचाये जायेंगे।
10 क्योंकि जब हम उसके बैरी थे उसने अपनी मृत्यु के द्वारा परमेश्वर से हमारा
मेलमिलाप कराया तो अब तो जब हमारा मेलमिलाप हो चुका है उसके जीवन से
हमारी और कितनी अधिक रक्षा होगी।
11 इतना ही नहीं है हम अपने प्रभु यीशु के द्वारा परमेश्वर की भक्ति पाकर अब
उसमें आनन्द लेते हैं।

आदम और यीशु

12 इसलिए एक व्यक्ति (आदम) के द्वारा जैसे धरती पर पाप आया और पाप से
मृत्यु और इस प्रकार मृत्यु सब लोगों के लिए आयी क्योंकि सभी ने पाप किये थे।
13 अब देखो व्यवस्था के आने से पहले जगत में पाप था किन्तु जब तक कोई
व्यवस्था नहीं होती किसी का भी पाप नहीं गिना जाता।
14 किन्तु आदम से लेकर मूसा के समय तक मौत सब पर राज करती रही। मौत
उन पर भी वैसे ही हावी रही जिन्होंने पाप नहीं किये थे जैसे आदम पर।

आदम भी वैसा ही था जैसा वह जो (मसीह) आने वाला था।
15 किन्तु परमेश्वर का वरदान आदम के अपराध के जैसा नहीं था क्योंकि यदि
उस एक व्यक्ति के अपराध के कारण सभी लोगों की मृत्यु हुई तो उस एक व्यक्ति
यीशु मसीह की करुणा के कारण मिले परमेश्वर के अनुग्रह और वरदान तो सभी
लोगों की भलाई के लिए कितना कुछ और अधिक है।
16 और यह वरदान भी उस पापी के द्वारा लाए गए परिणाम के समान नहीं है
क्योंकि दण्ड के हेतु न्याय का आगमन एक अपराध के बाद हुआ था। किन्तु यह
वरदान, जो दोष-मुक्ति की ओर ले जाता है, अनेक अपराधों के बाद आया था।
17 अतः यदि एक व्यक्ति की उस अपराध के कारण मृत्यु का शासन हो गया।
तो जो परमेश्वर के अनुग्रह और उसके वरदान की प्रचुरता का — जिसमें धर्मी का
निवास है — उपभोग कर रहे हैं — वे तो जीवन में उस एक व्यक्ति यीशु मसीह के
द्वारा और भी अधिक शासन करेंगे।

18 सो जैसे एक अपराध के कारण सभी लोगों को दोषी ठहराया गया, वैसे ही
एक धर्म के काम के द्वारा सब के लिए परिणाम में अनन्त जीवन प्रदान करने वाली
धार्मिकता मिली।
19 अतः जैसे उस एक व्यक्ति के आज्ञा न मानने के कारण सब लोग पापी बना
दिये गये वैसे ही उस व्यक्ति की आज्ञाकारिता के कारण सभी लोग धर्मी भी बना
दिये जायेंगे।
20 व्यवस्था का आगमन इसलिए हुआ कि अपराध बढ़ पायें। किन्तु जहाँ पाप
बढ़ा, वहाँ परमेश्वर का अनुग्रह और भी अधिक बढ़ा।
21 ताकि जैसे मृत्यु के द्वारा पाप ने राज्य किया ठीक वैसे ही हमारे प्रभु यीशु
मसीह के द्वारा अनन्त जीवन को लाने के लिये परमेश्वर की अनुग्रह धार्मिकता के
द्वारा राज्य करे।

6

पाप के लिए मृत किन्तु मसीह में जीवित

1 तो फिर हम क्या कहें? क्या हम पाप ही करते रहें ताकि परमेश्वर का अनुग्रह
बढ़ता रहे?
2 निश्चय ही नहीं। हम जो पाप के लिए मर चुके हैं पाप में ही कैसे जियेंगे?
3 या क्या तुम नहीं जानते कि हम, जिन्होंने यीशु मसीह में बपतिस्मा लिया है,
उसकी मृत्यु का ही बपतिस्मा लिया है।
4 सो उसकी मृत्यु में बपतिस्मा लेने से हम भी उसके साथ ही गाड़ दिये गये थे
ताकि जैसे परमपिता की महिमामय शक्ति के द्वारा यीशु मसीह को मरे हुओं में से
जिला दिया गया था, वैसे ही हम भी एक नया जीवन पायें।
5 क्योंकि जब हम उसकी मृत्यु में उसके साथ रहे हैं तो उसके जैसे पुनरूत्थान
में भी उसके साथ रहेंगे।
6 हम यह जानते हैं कि हमारा पुराना व्यक्तित्व यीशु के साथ ही क्रूस पर चढ़ा
दिया गया था ताकि पाप से भरे हमारे शरीर नष्ट हो जायें। और हम आगे के लिये
पाप के दास न बने रहें।
7 क्योंकि जो मर गया वह पाप के बन्धन से छुटकारा पा गया।
8 और क्योंकि हम मसीह के साथ मर गये, सो हमारा विश्वास है कि हम उसी
के साथ जियेंगे भी।
9 हम जानते हैं कि मसीह जिसे मरे हुओं में से जीवित किया था अमर है। उस
पर मौत का वश कभी नहीं चलेगा।
10 जो मौत वह मरा है, वह सदा के लिए पाप के लिए मरा है किन्तु जो जीवन
वह जी रहा है, वह जीवन परमेश्वर के लिए है।
11 इसी तरह तुम अपने लिए भी सोचो कि तुम पाप के लिए मर चुके हो किन्तु
यीशु मसीह में परमेश्वर के लिए जीवित हो।
12 इसलिए तुम्हारे नाशवान् शरीरों के ऊपर पाप का वश न चले। ताकि तुम
पाप की इच्छाओं पर कभी न चलो।
13 अपने शरीर के अंगों को अधर्म की सेवा के लिए पाप के हवाले न करो
बल्कि मरे हुओं में से जी उठने वालों के समान परमेश्वर के हवाले कर दो। और
अपने शरीर के अंगों को धार्मिकता की सेवा के साधन के रूप में परमेश्वर के हवाले
कर दो।

14 तुम पर पाप का शासन नहीं होगा क्योंकि तुम व्यवस्था के सहारे नहीं जीते
हो बल्कि परमेश्वर के अनुग्रह के सहारे जीते हो।

धार्मिकता के सेवक

15 तो हम क्या करें? क्या हम पाप करें? क्योंकि हम व्यवस्था के अधीन
नहीं, बल्कि परमेश्वर के अनुग्रह के अधीन जीते हैं। निश्चय ही नहीं।
16 क्या तुम नहीं जानते कि जब तुम किसी की आज्ञा मानने के लिए अपने आप
को दास के रूप में उसे सौंपते हो तो तुम दास हो। फिर चाहे तुम पाप के दास बनो,
जो तुम्हें मार डालेगा और चाहे आज्ञाकारिता के, जो तुम्हें धार्मिकता की तरफ ले
जायेगी।
17 किन्तु प्रभु का धन्यवाद है कि यद्यपि तुम पाप के दास थे, तुमने अपने मन
से उन उपदेशों की रीति को माना जो तुम्हें सौंपे गये थे।
18 तुम्हें पापों से छुटकारा मिल गया और तुम धार्मिकता के सेवक बन गए हो।
19 (मैं एक उदाहरण दे रहा हूँ जिसे सभी लोग समझ सकें क्योंकि उसे समझना
तुम लोगों के लिए कठिन है।) क्योंकि तुमने अपने शरीर के अंगों को अपवित्रता
और व्यवस्था हीनता के आगे उनके दास के रूप में सौंप दिया था जिससे व्यवस्था
हीनता पैदा हुई, अब तुम लोग ठीक वैसे ही अपने शरीर के अंगों को दास के रूप
में धार्मिकता के हाथों सौंप दो ताकि सम्पूर्ण समर्पण उत्पन्न हो।
20 क्योंकि तुम जब पाप के दास थे तो धार्मिकता की ओर से तुम पर कोई बन्धन
नहीं था।
21 और देखो उस समय तुम्हें कैसा फल मिला? जिसके लिए आज तुम शर्मिन्दा
हो, जिसका अंतिम परिणाम मृत्यु है।
22 किन्तु अब तुम्हें पाप से छुटकारा मिल चुका है और परमेश्वर के दास बना
दिये गये हो तो जो खेती तुम काट रहे हो, तुम्हें परमेश्वर के प्रति सम्पूर्ण समर्पण में
ले जायेगी। जिसका अंतिम परिणाम है अनन्त जीवन।
23 क्योंकि पाप का मूल्य तो बस मृत्यु ही है जबकि हमारे प्रभु यीशु मसीह में
अनन्त जीवन, परमेश्वर का सेंतमेतका वरदान है।

7

विवाह का दृष्टान्त

1 हे भाईयों, क्या तुम नहीं जानते (मैं उन लोगों से कह रहा हूँ जो व्यवस्था को
जानते है) कि व्यवस्था का शासन किसी व्यक्ति पर तभी तक है जब तक वह जीता
हैं?
2 उदाहरण के लिए एक विवाहिता स्त्री अपने पति के साथ विधान के अनुसार
तभी तक बँधी है जब तक वह जीवित है किन्तु यदि उसका पति मर जाता है, तो
वह विवाह सम्बन्धी नियमों से छूट जाती है।
3 पति के जीते जी यदि किसी दूसरे पुरुष से सम्बन्ध जोड़े तो उसे व्यभिचारिणी
कहा जाता है किन्तु यदि उसका पुरुष मर जाता है तो विवाह सम्बन्धी नियम उस पर
नहीं लगता और इसलिए यदि वह दूसरे पुरुष की हो जाती है तो भी वह व्यभिचारिणी
नहीं है।
4 हे मेरे भाईयों, ऐसे ही मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिए तुम भी मर
चुके हो। इसलिए अब तुम भी किसी दूसरे से नाता जोड़ सकते हो। उससे जिसे मरे
हुओं में से पुनर्जीवित किया गया है। ताकि हम परमेश्वर के लिए कर्मो की उत्तम
खेती कर सकें।
5 क्योंकि जब हम मानव स्वभाव के अनुसार जी रहे थे, हमारी पापपूर्ण वासनाएँ
जो व्यवस्था के द्वारा आयी थीं, हमारे अंगों पर हावी थीं। ताकि हम कर्मों की
ऐसी खेती करें जिसका अंत मौत में होता है।
6 किन्तु अब हमें व्यवस्था से छुटकारा दे दिया गया है क्योंकि जिस व्यवस्था
के अधीन हमें बंदी बनाया हुआ था, हम उसके लिये मर चुके हैं। और अब पुरानी
लिखित व्यवस्था से नहीं, बल्कि आत्मा की नयी रीति से प्रेरित होकर हम अपने
स्वामी परमेश्वर की सेवा करते हैं।

पाप से लड़ाई

7 तो फिर हम क्या कहें? क्या हम कहें कि व्यवस्था पाप है? निश्चय ही नहीं।
जो भी हो, यदि व्यवस्था नहीं होती तो मैं पहचान ही नहीं पाता कि पाप क्या है?
यदि व्यवस्था नहीं बताती, "जो अनुचित है उसकी चाहत मत करो" तो निश्चय
ही मैं पहचान ही नहीं पाता कि अनुचित इच्छा क्या है।
8 किन्तु पाप ने मौका मिलते ही व्यवस्था का लाभ उठाते हुए मुझमें हर तरह की
ऐसी इच्छाएँ भर दीं जो अनुचित के लिए थीं। व्यवस्था के अभाव में पाप तो मर
गया।

9 एक समय मैं बिना व्यवस्था के ही जीवित था, किन्तु जब व्यवस्था का आदेश
आया तो पाप जीवन में उभर आया।
10 और मैं मर गया। वही व्यवस्था का आदेश जो जीवन देने के लिए था, मेरे
लिए मृत्यु ले आया।
11 क्योंकि पाप को अवसर मिल गया और उसने उसी व्यवस्था के आदेश के
द्वारा मुझे छला और उसी के द्वारा मुझे मार डाला।
12 इस तरह व्यवस्था पवित्र है और वह विधान पवित्र, धर्मी और उत्तम है।
13 तो फिर क्या इसका यह अर्थ है कि जो उत्तम है, वही मेरी मृत्यु का कारण
बना? निश्चय ही नहीं। बल्कि पाप उस उत्तम के द्वारा मेरे लिए मृत्यु का इसलिए
कारण बना कि पाप को पहचाना जा सके। और व्यवस्था के विधान के द्वारा उसकी
भयानक पापपूर्णता दिखाई जा सके।

मानसिक द्वन्द्व

14 क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था तो आत्मिक है और मैं हाड़-माँस का
भौतिक मनुष्य हूँ जो पाप की दासता के लिए बिका हुआ है।
15 मैं नहीं जानता मैं क्या कर रहा हूँ क्योंकि मैं जो करना चाहता हूँ, नहीं
करता, बल्कि मुझे वह करना पड़ता है, जिससे मैं घृणा करता हूँ।
16 और यदि मैं वही करता हूँ जो मैं नहीं करना चाहता तो मैं स्वीकार करता हूँ
कि व्यवस्था उत्तम है।
17 किन्तु वास्तव में वह मैं नहीं हूँ जो यह सब कुछ कर रहा है, बल्कि यह मेरे
भीतर बसा पाप है।
18 हाँ, मैं जानता हूँ कि मुझ में यानी मेरे भौतिक मानव शरीर में किसी अच्छी
वस्तु का वास नहीं है। नेकी करने के इच्छा तो मुझ में है पर नेक काम मुझ से नहीं
होते।
19 क्योंकि जो अच्छा काम मैं करना चाहता हूँ, मैं नहीं करता बल्कि जो मैं
नहीं करना चाहता, वे ही बुरे काम मैं करता हूँ।
20 और यदि मैं वही काम करता हूँ जिन्हें करना नहीं चाहता तो वास्तव में
उनका कर्ता जो उन्हें कर रहा है, मैं नहीं हूँ, बल्कि वह पाप है जो मुझ में बसा है।
21 इसलिए मैं अपने में यह नियम पाता हूँ कि मैं जब अच्छा करना चाहता हूँ,
तो अपने में बुराई को ही पाता हूँ।
22 अपनी अन्तरात्मा में मैं परमेश्वर की व्यवस्था को सहर्ष मानता हूँ।

23 पर अपने शरीर में मैं एक दूसरे ही नियम को काम करते देखता हूँ यह मेरे
चिन्तन पर शासन करने वाली व्यवस्था से युद्ध करता है और मुझे पाप की व्यवस्था
का बंदी बना लेता है। यह व्यवस्था मेरे शरीर में क्रियाशील है।
24 मैं एक अभागा इंसान हूँ। मुझे इस शरीर से, जो मौत का निवाला है, छुटकारा
कौन दिलायेगा?
25 अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ। सो अपने
हाड़ माँस के शरीर से मैं पाप की व्यवस्था का गुलाम होते हुए भी अपनी बुद्धि से
परमेश्वर की व्यवस्था का सेवक हूँ।

8

आत्मा से जीवन

1 इस प्रकार अब उनके लिये जो यीशु मसीह में स्थित हैं, कोई दण्ड नहीं है।
[क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं बल्कि आत्मा के अनुसार चलते है।]
2 क्योंकि आत्मा की व्यवस्था ने जो यीशु मसीह में जीवन देती है, तुझे पाप की
व्यवस्था से जो मृत्यु की ओर ले जाती है, स्वतन्त्र कर दिया है।*
3 जिसे मूसा की वह व्यवस्था जो मनुष्य के भौतिक स्वभाव के कारण दुर्बल
बना दी गई थी, नहीं कर सकी उसे परमेश्वर ने अपने पुत्र को हमारे ही जैसे शरीर
में भेजकर जिससे हम पाप करते हैं — उसकी भौतिक देह को पाप वाली बनाकर
पाप को निरस्त करके पूरा किया।
4 जिससे कि हमारे द्वारा, जो देह की भौतिक विधि से नहीं, बल्कि आत्मा की
विधि से जीते हैं, व्यवस्था की आवश्यकताएँ पूरी की जा सकें।
5 क्योंकि वे जो अपने भौतिक मानव स्वभाव के अनुसार जीते हैं, उनकी बुद्धि
मानव स्वभाव की इच्छाओं पर टिकी रहती है परन्तु वे जो आत्मा के अनुसार जीते
है, उनकी बुद्धि जो आत्मा चाहती है उन अभिलाषाओं में लगी रहती है।
6 भौतिक मानव स्वभाब के बस में रहने वाले मन का अन्त मृत्यु है, किन्तु
आत्मा के वश में रहने वाली बुद्धि का परिणाम है जीवन और शान्ति।
7 इस तरह भौतिक मानव स्वभाव से अनुशासित मन परमेश्वर का विरोधी है।
क्योंकि वह न तो परमेश्वर के नियमों के अधीन है और न हो सकता है।

---

* **8:2:** □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□□□□□ □□□ □□ “□□□□□”

8 और वे जो भौतिक मानव स्वभाव के अनुसार जीते हैं, परमेश्वर को प्रसन्न
नहीं कर सकते।
9 किन्तु तुम लोग भौतिक मानव स्वभाव के अधीन नहीं हो, बल्कि आत्मा
के अधीन हो यदि वास्तव में तुममें परमेश्वर की आत्मा का निवास है। किन्तु यदि
किसी में यीशु मसीह की आत्मा नहीं है तो वह मसीह का नहीं है।
10 दूसरी तरफ यदि तुममें मसीह है तो चाहे तुम्हारी देह पाप के हेतु मर चुकी
है पवित्र आत्मा, परमेश्वर के साथ तुम्हें धार्मिक ठहराकर स्वयं तुम्हारे लिए जीवन
बन जाती है।
11 और यदि वह आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया था, तुम्हारे
भीतर वास करती है, तो वह परमेश्वर जिस ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया था,
तुम्हारे नाशवान शरीरों को अपनी आत्मा से जो तुम्हारे ही भीतर बसती है, जीवन
देगा।
12 इसलिए मेरे भाईयों, हम पर इस भौतिक शरीर का कर्ज़ तो है किन्तु ऐसा
नहीं कि हम इसके अनुसार जियें।
13 क्योंकि यदि तुम भौतिक शरीर के अनुसार जिओगे तो मरोगे। किन्तु यदि
तुम आत्मा के द्वारा शरीर के व्यवहारों का अंत कर दोगे तो तुम जी जाओगे।
14 जो परमेश्वर की आत्मा के अनुसार चलते हैं, वे परमेश्वर की संतान हैं।
15 क्योंकि वह आत्मा जो तुम्हें मिली है, तुम्हें फिरसे दास बनाने या डराने के
लिए नहींहै, बल्कि वह आत्मा जो तुमने पाया है तुम्हें परमेश्वर की संपालित संतान
बनाती है।जिस से हम पुकार उठते हैं, "हे अब्बा, हे पिता!"
16 वह पवित्र आत्मा स्वयं हमारीआत्मा के साथ मिलकर साक्षी देती है कि हम
परमेश्वर की संतान हैं।
17 और क्योंकि हम उसकी संतान हैं, हम भी उत्तराधिकारी हैं, परमेश्वर के
उत्तराधिकारी और मसीह के साथ हम उत्तराधिकारी यदि वास्तव में उसके साथ
दुःख उठाते हैं तो हमें उसके साथ महिमा मिलेगी ही।

हमें महिमा मिलेगी

18 क्योंकि मेरे विचार में इस समय की हमारी यातनाएँ प्रकट होने वाली भावी
महिमा के आगे कुछ भी नहीं है।
19 क्योंकि यह सृष्टि बड़ी आशा से उस समय का इंतज़ार कर रही है जब
परमेश्वर की संतान को प्रकट किया जायेगा।

20 यह सृष्टि निःसार थी अपनी इच्छा से नहीं, बल्कि उसकी इच्छा से जिसने
इसे इस आशा के अधीन किया
21 कि यह भी कभी अपनी विनाशमानता से छुटकारा पाकर परमेश्वर की संतान
की शानदार स्वतन्त्रता का आनन्द लेगी।
22 क्योंकि हम जानते हैं कि आज तक समूची सृष्टि पीड़ा में कराहती और
तड़पती रही है।
23 न केवल यह सृष्टि बल्कि हम भी जिन्हें आत्मा का पहला फल मिला है,
अपने भीतर कराहते रहे है। क्योंकि हमें उसके द्वारा पूरी तरह अपनाये जाने का
इंतजार है कि हमारी देह मुक्ति हो जायेगी।
24 हमारा उद्धार हुआ है। इसी से हमारे मन में आशा है किन्तु जब हम जिसकी
आशा करते है, उसे देख लेते हैं तो वह आशा नहीं रहती। जो दिख रहा है उसकी
आशा कौन कर सकता है।
25 किन्तु यदि जिसे हम देख नहीं रहे उसकी आशा करते हैं तो धीरज और
सहनशीलता के साथ उसकी बाट जोहते हैं।
26 ऐसे ही जैसे हम कराहते हैं, आत्मा हमारी दुर्बलता में हमारी सहायता करने
आती है क्योंकि हम नहीं जानते कि हम किसके लिये प्रार्थना करें। किन्तु आत्मा
स्वयं ऐसी आहें भर कर जिनकी शब्दों में अभिव्यक्ति नहीं की जा सकती, हमारे
लिए विनती करती है।
27 किन्तु वह अन्तर्यामी जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है। क्योंकि
परमेश्वर की इच्छा से ही वह परमेश्वर के पवित्र जनों के लिए मध्यस्थता करती
है।
28 और हम जानते हैं कि हर परिस्थिति में वह आत्मा परमेश्वर के भक्तों के
साथ मिल कर वह काम करता है जो भलाई ही लाते हैं उन सब के लिए जिन्हें
उसके प्रयोजन के अनुसार ही बुलाया गया है।
29 जिन्हें उसने पहले ही चुना उन्हें पहले ही अपने पुत्र के रूप में ठहराया ताकि
बहुत से भाइयों में वह सबसे बड़ा भाई बन सके।
30 जिन्हें उसने पहले से निश्चित किया, उन्हें भी उसने बुलाया और जिन्हें उसने
बुलाया, उन्हें उसने धर्मी ठहराया और जिन्हें उसने धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी
प्रदान की।

परमेश्वर का प्रेम

31 तो इसे देखते हुए हम क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारे पक्ष में है तो हमारे
विरोध में कौन हो सकता है?
32 उसने जिसने अपने पुत्र तक को बचा कर नहीं रखा बल्कि उसे हम सब
के लिए मरने को सौंप दिया। वह भला हमें उसके साथ और सब कुछ क्यों नहीं
देगा?
33 परमेश्वर के चुने हुए लोगों पर ऐसा कौन है जो,दोष लगायेगा? वह परमेश्वर
ही है जो उन्हें निर्दोष ठहराता है।
34 ऐसा कौन है जो उन्हें दोषी ठहराएगा? मसीह यीशु वह है जो मर गया (और
इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण यह है कि) उसे फिर जिलाया गया। जो परमेश्वर के
दाहिनी ओर बैठा है और हमारी ओर से विनती भी करता है
35 कौन है जो हमें मसीह के प्यार से अलग करेगा? यातना या कठिनाई या
अत्याचार या अकाल या नंगापन या जोख़िम या तलवार?
36 जैसा कि शास्त्र कहता है:

"तेरे (मसीह) लिए सारे दिन हमें मौत को सौंपा जाता है।
हम काटी जाने वाली भेड़ जैसे समझे जाते हैं।" भजन संहिता *44:22*

37 तब भी उसके द्वारा जो हमें प्रेम करता है, इन सब बातों में हम एक शानदार
विजय पा रहे हैं।
38 क्योंकि मैं मान चुका हूँ कि न मृत्यु और न जीवन, न स्वर्गदूत और न शासन
करने वाली आत्माएँ, न वर्तमान की कोई वस्तु और न भविष्य की कोई वस्तु, न
आत्मिक शक्तियाँ,
39 न कोई हमारे ऊपर का और न हमसे नीचे का, न सृष्टि की कोई और वस्तु
हमें प्रभु के उस प्रेम से, जो हमारे भीतर प्रभु यीशु मसीह के प्रति है, हमें अलग कर
सकेगी।

9

परमेश्वर और यहूदी लोग

1 मसीह में मैं सच कह रहा हूँ। मैं झूठ नहीं कहता और मेरी चेतना जो पवित्र
आत्मा के द्वारा प्रकाशित है, मेरे साथ मेरी साक्षी देती है,
2 कि मुझे गहरा दुःख है और मेरे मन में निरन्तर पीड़ा है।

3 काश मैं चाह सकता कि अपने भाई बहनों और दुनियावी सम्बन्धियों के लिए
मैं मसीह का शाप अपने ऊपर ले लेता और उससे अलग हो जाता।
4 जो इस्राएली हैं और जिन्हें परमेश्वर की संपालित संतान होने का अधिकार है,
जो परमेश्वर की महिमा का दर्शन कर चुके है, जो परमेश्वर के करार के भागीदार
हैं। जिन्हें मूसा की व्यवस्था, सच्ची उपासना और वचन प्रदान किया गया है।
5 पुरखे उन्हीं से सम्बन्ध रखते हैं और मानव शरीर की दृष्टि से मसीह उन्हीं में
पैदा हुआ जो सब का परमेश्वर है और सदा धन्य है! आमीन।
6 ऐसा नहीं है कि परमेश्वर ने अपना वचन पूरा नहीं किया है क्योंकि जो
इस्राएल के वंशज हैं, वे सभी इस्राएली नहीं है।
7 और न ही इब्राहीम के वंशज होने के कारण वे सब सचमुच इब्राहीम की संतान
है। बल्कि जैसा परमेश्वर ने कहा, "तेरे वंशज इसहाक के द्वारा अपनी परम्परा
बढ़ाएंगे।"✡
8 अर्थात यह नहीं है कि प्राकृतिक तौर पर शरीर से पैदा होने वाले बच्चे परमेश्वर
के वंशज है, बल्कि परमेश्वर के वचन से प्रेरित होने वाले उसके वंशज माने जाते
हैं।
9 वचन इस प्रकार कहा गया था: "निश्चित समय पर मैं लौटूँगा और सारा
पुत्रवती होगी।"✡
10 इतना ही नहीं जब रिबका भी एक व्यक्ति, हमारे पूर्व पिता इसहाक से
गर्भवती हुई
11 तो बेटों के पैदा होने से पहले और उनके कुछ भी भला बुरा करने से पहले
कहा गया था जिससे परमेश्वर का वह प्रयोजन सिद्ध हो जो चुनाव से सिद्ध होता है।
12 और जो व्यक्ति के कर्मों पर नहीं टिका बल्कि उस परमेश्वर पर टिका है
जो बुलाने वाला है। रिबका से कहा गया, "बड़ा बेटा छोटे बेटे की सेवा करेगा।"✡
13 शास्त्र कहता है: "मैंने याकूब को चुना और इसाऊ को नकार दिया।"✡
14 तो फिर हम क्या कहें? क्या परमेश्वर अन्यायी है?
15 निश्चय ही नहीं! क्योंकि उसने मूसा से कहा था, "मैं जिस किसी पर भी
दया करने की सोचूँगा, दया दिखाऊँगा। और जिस किसी पर भी अनुग्रह करना

✡ **9:7:** □□□□□□ □□□□□□□□ 21:12 ✡ **9:9:** □□□□□□ □□□□□□□□ 18:10, 14 ✡ **9:12:** □□□□□□ □□□□□□□□ 25:23 ✡ **9:13:** □□□□□□ □□□□□ 1:2-3

चाहूँगा, अनुग्रह करूँगा।”✡

16 इसलिए न तो यह किसी की इच्छा पर निर्भर करता है और न किसी की
दौड़ धूप पर बल्कि दयालु परमेश्वर पर निर्भर करता है।
17 क्योंकि शास्त्र में परमेश्वर ने फिरौन से कहा था, “मैंने तुझे इसलिए खड़ा
किया था कि मैं अपनी शक्ति तुझ में दिखा सकूँ। और मेरा नाम समूची धरती पर
घोषित किया जाये।”✡
18 सो परमेश्वर जिस पर चाहता है दया करता है और जिसे चाहता है कठोर
बना देता है।
19 तो फिर तू शायद मुझ से कहे, “यदि हमारे कर्मों का नियन्त्रण करने वाला
परमेश्वर है तो फिर भी वह उसमें हमारा दोष क्यों समझता है?” आखिरकार
उसकी इच्छा का विरोध कौन कर सकता है?
20 मनुष्य तू कौन होता है जो परमेश्वर को उलट कर उत्तर दे? क्या कोई रचना
अपने रचने वाले से पूछ सकती है, “तूने मुझे ऐसा क्यों बनाया?”
21 क्या किसी कुम्हार की मिट्टी पर यह अधिकार नहीं है कि वह किसी एक
लौंदे से एक बरतनों विशेष प्रयोजन के लिए और दूसरा हीन प्रयोजन के लिए
बनाये?
22 किन्तु इसमें क्या है यदि परमेश्वर ने अपना क्रोध दिखाने और अपनी शक्ति
जताने के लिए उन लोगों की, जो क्रोध के पात्र थे और जिनका विनाश होने को
था, बड़े धीरज के साथ सही,
23 उसने उनकी सही ताकि वह उन लोगों के लाभ के लिए जो दया के पात्र
थे और जिन्हें उसने अपनी महिमा पाने के लिए बनाया था, उन पर अपनी महिमा
प्रकट कर सके।
24 अर्थात हम जिन्हें उसने न केवल यहूदियों में से बुलाया बल्कि ग़ैर यहूदियों
में से भी
25 जैसा कि होशे की पुस्तक में लिखा है:

“जो लोग मेरे नहीं थे
उन्हें मैं अपना कहूँगा।
और वह स्त्री जो प्रिय नहीं थी

✡ **9:15:** □□□□□□ □□□□□□□ 33:19 ✡ **9:17:** □□□□□□ □□□□□□□ 9:16

मैं उसे प्रिया कहूँगा।” होशे *2:23*

26 और,

“वैसा ही घटेगा जैसा उसी भाग में उनसे कहा गया था,
‘तुम लोग मेरी प्रजा नहीं हो।’
वहीं वे जीवित परमेश्वर की सन्तान कहलाएँगे।” होशे *1:10*

27 और यशायाह इस्राएल के बारे में पुकार कर कहता है:

“यद्यपि इस्राएल की सन्तान समुद्र की बालू के कणों के समान असंख्य हैं।
तो भी उनमें से केवल थोड़े से ही बच पायेंगे।
28 क्योंकि प्रभु पृथ्वी पर अपने न्याय को पूरी तरह से और जल्दी ही पूरा करेगा।”
यशायाह *10:22-23*

29 और जैसा कि यशायाह ने भविष्यवाणी की थी:

“यदि सर्वशक्तिमान प्रभु हमारे लिए,
वंशज न छोड़ता
तो हम सदोम जैसे
और अरोमा जैसे ही हो जाते।” यशायाह *1:9*

30 तो फिर हम क्या कहें? हम इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि अन्य जातियों के लोग जो धार्मिकता की खोज में नहीं थे, उन्होंने धार्मिकता को पा लिया है। वे जो विश्वास के कारण ही धार्मिक ठहराए गए।
31 किन्तु इस्राएल के लोगों ने जो ऐसी व्यवस्था पर चलना चाहते थे जो उन्हें धार्मिक ठहराती, उसके अनुसार नहीं जी सके।
32 क्यों नहीं? क्योंकि वे इसका पालन विश्वास से नहीं, बल्कि अपने कर्मों से कर रहे थे, वे उस चट्टान पर ठोकर खा गये, जो ठोकर दिलाती है।
33 जैसा कि शास्त्र कहता है:

“देखो, मैं सिय्योन में एक पत्थर रख रहा हूँ, जो ठोकर दिलाता है

और एक चट्टान जो अपराध कराती है।
किन्तु वह जो उस में विश्वास करता है, उसे कभी निराश नहीं होना होगा।" यशायाह *8:14; 28:16*

10

1 हे भाईयों, मेरे हृदय की इच्छा है और मैं परमेश्वर से उन सब के लिये प्रार्थना
करता हूँ कि उनका उद्धार हो।
2 क्योंकि मैं साक्षी देता हूँ कि उनमें परमेश्वर की धुन है। किन्तु वह ज्ञान पर
नहीं टिकी है,
3 क्योंकि वे उस धार्मिकता को नहीं जानते थे जो परमेश्वर से मिलती है और
वे अपनी ही धार्मिकता की स्थापना का जतन करते रहे सो उन्होंने परमेश्वर की
धार्मिकता को नहीं स्वीकारा।
4 मसीह ने व्यवस्था का अंत किया ताकि हर कोई जो विश्वास करता है, परमेश्वर
के लिए धार्मिक हो।
5 धार्मिकता के बारे में जो व्यवस्था से प्राप्त होती है, मूसा ने लिखा है, "जो
व्यवस्था के नियमों पर चलेगा, वह उनके कारण जीवित रहेगा।"✡
6 किन्तु विश्वास से मिलने वाली धार्मिकता के विषय में शास्त्र यह कहता है: "तू
अपने से यह मत पूछ, 'स्वर्ग में ऊपर कौन जायेगा?' " (यानी, "मसीह को नीचे
धरती पर लाने।")
7 "या, 'नीचे पाताल में कौन जायेगा?' " (यानी, "मसीह को धरती के नीचे
से ऊपर लाने। यानी मसीह को मरे हुओं में से वापस लाने।")
8 शास्त्र यह कहता है: "वचन तेरे पास है, तेरे होठों पर है और तेरे मन में है।"✡
यानी विश्वास का वह वचन जिसका हम प्रचार करते है।
9 कि यदि तू अपने मुँह से कहे, "यीशु मसीह प्रभु है," और तू अपने मन में
यह विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जीवित किया तो तेरा उद्धार हो
जायेगा।
10 क्योंकि अपने हृदय के विश्वास से व्यक्ति धार्मिक ठहराया जाता है और
अपने मुँह से उसके विश्वास को स्वीकार करने से उसका उद्धार होता है।

✡ **10:5:** □□□□□□ □□□□□ 18:5 ✡ **10:8:** □□□□□□ □□□□□□□□ 30:14

11 शास्त्र कहता है: "जो कोई उसमें विश्वास रखता है उसे निराश नहीं होना
पड़ेगा।"✡
12 यह इसलिए है कि यहूदियों और ग़ैर यहूदियों में कोई भेद नहीं क्योंकि सब
का प्रभु तो एक ही है। और उसकी दया उन सब के लिए, जो उसका नाम लेते है,
अपरम्पार है।
13 "हर कोई जो प्रभु का नाम लेता है, उद्धार पायेगा।"✡

14 किन्तु वे जो उसमें विश्वास नहीं करते, उसका नाम कैसे पुकारेंगे? और वे
जिन्होंने उसके बारे में सुना ही नहीं, उसमें विश्वास कैसे कर पायेंगे? और फिर
भला जब तक कोई उन्हें उपदेश देने वाला न हो, वे कैसे सुन सकेंगे?
15 और उपदेशक तब तक उपदेश कैसे दे पायेंगे जब तक उन्हें भेजा न गया हो?
जैसा कि शास्त्रों में कहा है: "सुसमाचार लाने वालों के चरण कितने सुन्दर हैं।"✡

16 किन्तु सब ने सुसमाचार को स्वीकारा नहीं। यशायाह कहता है, "हे प्रभु,
हमारे उपदेश को किसने स्वीकार किया?"✡
17 सो उपदेश के सुनने से विश्वास उपजता है और उपदेश तब सुना जाता है जब
कोई मसीह के विषय में उपदेश देता है।
18 किन्तु मैं कहता हूँ, "क्या उन्होंने हमारे उपदेश को नहीं सुना?" हाँ, निश्चय
ही। शास्त्र कहता है:

"उनका स्वर समूची धरती पर फैल गया,
और उनके वचन जगत के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँचा।" भजन संहिता *19:4*

19 किन्तु मैं पूछता हूँ, "क्या इस्राएली नहीं समझते थे?" मूसा कहता है:

"पहले मैं तुम लोगों के मन में ऐसे लोगों के द्वारा जो वास्तव में कोई जाति नहीं
हैं, डाह पैदा करूँगा।
मैं विश्वासहीन जाति के द्वारा तुम्हें क्रोध दिलाऊँगा।" व्यवस्था विवरण *32:21*

✡ **10:11:** □□□□□□ □□□. 28:16 ✡ **10:13:** □□□□□□ □□□□ 2:32
✡ **10:15:** □□□□□□ □□□. 52:7 ✡ **10:16:** □□□□□□ □□□. 53:1

20 फिर यशायाह साहस के साथ कहता है:

"मुझे उन लोगों ने पा लिया
जो मुझे नहीं खोज रहे थे।
मैं उनके लिए प्रकट हो गया जो मेरी खोज खबर में नहीं थे।" यशायाह *65:1*

21 किन्तु परमेश्वर ने इस्राएलियों के बारे में कहा है,

"मैं सारे दिन आज्ञा न मानने वाले
और अपने विरोधियों के आगे हाथ फैलाए रहा।" यशायाह *65:2*

11

परमेश्वर अपने लोगों को नहीं भूला

1 तो मैं पूछता हूँ, "क्या परमेश्वर ने अपने ही लोगों को नकार नहीं दिया?"
निश्चय ही नहीं। क्योंकि मैं भी एक इस्राएली हूँ, इब्राहीम के वंश से और बिन्यामीन
के गोत्र से हूँ।
2 परमेश्वर ने अपने लोगों को नहीं नकारा जिन्हें उसने पहले से ही चुना था।
अथवा क्या तुम नहीं जानते कि एलिय्याह के बारे में शास्त्र क्या कहता है: कि जब
एलिय्याह परमेश्वर से इस्राएल के लोगों के विरोध में प्रार्थना कर रहा था?
3 "हे प्रभु, उन्होंने तेरे नबियों को मार डाला। तेरी वेदियों को तोड़ कर गिरा
दिया। केवल एक नबी मैं ही बचा हूँ और वे मुझे भी मार डालने का जतन कर रहे
हैं।"✡
4 किन्तु तब परमेश्वर ने उसे कैसे उत्तर दिया था, "मैंने अपने लिए सात हजार
लोग बचा रखे हैं जिन्होंने बाल के आगे माथा नहीं टेका।"✡
5 सो वैसे ही आज कल भी कुछ ऐसे लोग बचे हैं जो उसके अनुग्रह के कारण
चुने हुए हैं।
6 और यदि यह परमेश्वर के अनुग्रह का परिणाम है तो लोग जो कर्म करते हैं,
यह उन कर्मों का परिणाम नहीं है। नहीं तो परमेश्वर की अनुग्रह, अनुग्रह ही नहीं
ठहरती।

✡ **11:3:** □□□□□□ 1 राजा 19:10, 14 ✡ **11:4:** □□□□□□ 1 राजा 19:18

7 तो इससे क्या? इस्राएल के लोग जिसे खोज रहे थे, वे उसे नहीं पा सके।
किन्तु चुने हुओं को वह मिल गया। जबकि बाकी सब को कठोर बना दिया गया।
8 शास्त्र कहता है:

"परमेश्वर ने उन्हें एक चेतना शून्य आत्मा प्रदान की।" यशायाह *29:10*

"ऐसी आँखें दीं जो देख नहीं सकती थीं
और ऐसे कान दिए जो सुन नहीं सकते थे।
और यही दशा ठीक आज तक बनी हुई है।" व्यवस्था विवरण *29:4*

9 दाऊद कहता है:

"अपने ही भोजनों में फँसकर वे बंदी बन जाएँ
उनका पतन हो और उन्हें दण्ड मिले।
10 उनकी आँखें धुँधली हो जायें ताकि वे देख न सकें
और तू उनकी पीड़ाओं तले, उनकी कमर सदा-सदा झुकाए रखें।" भजन संहिता *69:22-23*

11 सो मैं कहता हूँ क्या उन्होंने इसलिए ठोकर खाई कि वे गिर कर नष्ट हो जायें?
निश्चय ही नहीं। बल्कि उनके गलती करने से ग़ैर यहूदी लोगों को छुटकारा मिला
ताकि यहूदियों में स्पर्धा पैदा हो।
12 इस प्रकार यदि उनके गलती करने का अर्थ सारे संसार का बड़ा लाभ है और
यदि उनके भटकने से ग़ैर यहूदियों का लाभ है तो उनकी सम्पूर्णता से तो बहुत कुछ
होगा।
13 यह अब मैं तुमसे कह रहा हूँ, जो यहूदी नहीं हो, क्योंकि मैं विशेष रूप से
ग़ैर यहूदियों के लिये प्रेरित हूँ, मैं अपने काम के प्रति पूरा प्रयत्नशील हूँ।
14 इस आशा से कि मैं अपने लोगों में भी स्पर्धा जगा सकूँ और उनमें से कुछ
का उद्धार करूँ।
15 क्योंकि यदि परमेश्वर के द्वारा उनके नकार दिये जाने से जगत में परमेश्वर
के साथ मेलपिलाप पैदा होता है तो फिर उनका अपनाया जाना क्या मरे हुओं में से
जिलाया जाना नहीं होगा?

16 यदि हमारी भेंट का एक भाग पवित्र है तो क्या वह समूचा ही पवित्र नहीं
है? यदि पेड़ की जड़ पवित्र है तो उसकी शाखाएँ भी पवित्र हैं।
17 किन्तु यदि कुछ शाखाएँ तोड़ कर फेंक दी गयीं और तू जो एक जँगली
जैतून की टहनी है उस पर पेबंद चढ़ा दिया जाये और वह जैतून के अच्छे पेड़ की
जड़ों की शक्ति का हिस्सा बटाने लगे,
18 तो तुझे उन टहनियों के आगे, जो तोड़ कर फेंक दी गयी, अभिमान नहीं
करना चाहिये। और यदि तू अभिमान करता है तो याद रख यह तू नहीं हैं जो जड़ों
को पाल रहा हैं, बल्कि यह तो वह जड़ ही है जो तुझे पाल रही है।
19 अब तू कहेगा, "हाँ, किन्तु शाखाएँ इसलिए तोड़ीगयीं कि मेरा पेबंद चढ़े।"
20 यह सत्य है,वे अपने अविश्वास के कारण तोड़ फेंकी गयीं किन्तु तुम अपने
विश्वास के बल पर अपनी जगह टिके रहे। इसलिए इसका गर्व मत कर बल्कि
डरता रह।
21 यदि परमेश्वर ने प्राकृतिक डालियाँ नहीं रहने दीं तो वह तुझे भी नहीं रहने
देगा।
22 इसलिए तू परमेश्वर की कोमलता को देख और उसकी कठोरता पर ध्यान
दे। यह कठोरता उनके लिए है जो गिर गये किन्तु उसकी करुणा तेरे लिए है यदि तू
अपने पर उसका अनुग्रह बना रहने दे। नहीं तो पेड़ से तू भी काट फेंका जायेगा।
23 और यदि वे अपने अविश्वास में न रहे तो उन्हें भी फिर पेड़ से जोड़ लिया
जायेगा क्योंकि परमेश्वर समर्थ है कि उन्हें फिर से जोड़ दे।
24 जब तुझे प्राकृतिक रूप से जंगली जैतून के पेड़ से एक शाखा की तरह काट
कर प्रकृति के विरुद्ध एक उत्तम जैतून के पेड़ से जोड़ दिया गया, तो ये जो उस पेड़
की अपनी डालियाँ हैं, अपने ही पेड़ में आसानी से, फिर से क्यों नहीं जोड़ दी
जायेंगे।
25 हे भाईयों! मैं तुम्हें इस छिपे हुए सत्य से अंजान नहीं रखना चाहता, कि
तुम अपने आप को बुद्धिमान समझने लगो कि इस्राएल के कुछ लोग ऐसे ही कठोर
बना दिए गए हैं और ऐसे ही कठोर बने रहेंगे जब तक कि काफी ग़ैर यहूदी परमेश्वर
के परिवार के अंग नहीं बन जाते।
26 और इस तरह समूचे इस्राएल का उद्धार होगा। जैसा कि शास्त्र कहता है:

"उद्धार करने वाला सिय्योन से आयेगा;
वह याकूब के परिवार से सभी बुराइयाँ दूर करेगा।

27 मेरा यह वाचा उनके साथ
तब होगा जब मैं उनके पापों को हर लूँगा।" यशायाह *59:20-21; 27:9*

28 जहाँ तक सुसमाचार का सम्बन्ध है, वे तुम्हारे हित में परमेश्वर के शत्रु हैं
किन्तु जहाँ तक परमेश्वर द्वारा उनके चुने जाने का सम्बन्ध है, वे उनके पुरखों को
दिये वचन के अनुसार परमेश्वर के प्यारे हैं।
29 क्योंकि परमेश्वर जिसे बुलाता है और जिसे वह देता है, उसकी तरफ़ से
अपना मन कभी नहीं बदलता।
30 क्योंकि जैसे तुम लोग पहले कभी परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते थे किन्तु
अब तुम्हें उसकी अवज्ञाके कारण परमेश्वर की दया प्राप्त है।
31 वैसेही अब वे उसकी आज्ञा नहीं मानते क्योंकि परमेश्वर की दया तुम पर
है। ताकि अब उन्हें भी परमेश्वर की दया मिले।
32 क्योंकि परमेश्वर ने सब लोगों को अवज्ञा के कारागार में इसलिए डाल रखा
है कि वह उन पर दया कर सके।

परमेश्वर धन्य है

33 परमेश्वर की करुणा, बुद्धि और ज्ञान कितने अपरम्पार हैं। उसके न्याय कितने
गहन हैं; उसके रास्ते कितने गूढ़ है।
34 शास्त्र कहता है:

"प्रभु के मन को कौन जानता है?
और उसे सलाह देने वाला कौन हो सकता हैं?" यशायाह *40:13*

35 "परमेश्वर को किसी ने क्या दिया है?
वह किसी को उसके बदले कुछ दे।" अय्यूब *41:11*

36 क्योंकि सब का रचने वाला वही है। उसी से सब स्थिर है और वह उसी के
लिए है। उसकी सदा महिमा हो! आमीन।

12

अपने जीवन प्रभु को अर्पण करो

1 इसलिए हे भाइयो परमेश्वर की दया का स्मरण दिलाकर मैं तुमसे आग्रह करता
हूँ कि अपने जीवन एक जीवित बलिदान के रूप में परमेश्वर को प्रसन्न करते हुए
अर्पित कर दो। यह तुम्हारी आध्यात्मिक उपासना है जिसे तुम्हें उसे चुकाना है।
2 अब और आगे इस दुनिया की रीति पर मत चलो बल्कि अपने मनों को नया
करके अपने आप को बदल डालो ताकि तुम्हें पता चल जाये कि परमेश्वर तुम्हारे
लिए क्या चाहता है। यानी जो उत्तम है, जो उसे भाता है और जो सम्पूर्ण है।
3 इसलिए उसके अनुग्रह के कारण जो उपहार उसने मुझे दिया है, उसे ध्यान में
रखते हुए मैं तुममें से हर एक से कहता हूँ, अपने को यथोचित समझो अर्थात जितना
विश्वास उसने तुम्हें दिया है, उसी के अनुसार अपने को समझना चाहिए।
4 क्योंकि जैसे हममें से हर एक के शरीर में बहुत से अंग हैं। चाहे सब अंगों
का काम एक जैसा नहीं है।
5 हम अनेक हैं किन्तु मसीह में हम एक देह के रूप में हो जाते हैं। इस प्रकार
हर एक अंग हर दूसरे अंग से जुड़ जाता है।
6 तो फिर उसके अनुग्रह के अनुसार हमें जो अलग-अलग उपहार मिले हैं, हम
उनका प्रयोग करें। यदि किसी को भविष्यवाणी की क्षमता दी गयी है तो वह उसके
पास जितना विश्वास है उसके अनुसार भविष्यवाणी करे।
7 यदि किसी को सेवा करने का उपहार मिला है तो अपने आप को सेवा के लिये
अर्पित करे, यदि किसी को उपदेश देने का काम मिला है तो उसे अपने आप को
प्रचार में लगाना चाहिए।
8 यदि कोई सलाह देने को है तो उसे सलाह देनी चाहिए। यदि किसी को दान देने
का उपहार मिला है तो उसे मुक्त भाव से दान देना चाहिए। यदि किसी को अगुआई
करने का उपहार मिलता है तो वह लगन के साथ अगुआई करे, जिसे दया दिखाने
को मिली है, वह प्रसन्नता से दया करे।
9 तुम्हारा प्रेम सच्चा हो। बुराई से घृणा करो। नेकी से जुड़ो।
10 भाई चारे के साथ एक दूसरे के प्रति समर्पित रहो। आपस में एक दूसरे को
आदर के साथ अपने से अधिक महत्व दो।
11 उत्साही बनो, आलसी नहीं, आत्मा के तेज से चमको। प्रभु की सेवा करो।
12 अपनी आशा में प्रसन्न रहो। विपत्ति में धीरज धरो। निरन्तर प्रार्थना करते
रहो।
13 परमेश्वर के लोगों की आवश्यकताओं में हाथ बटाओ। अतिथि सत्कार के
अवसर ढूँढते रहो।

14 जो तुम्हें सताते हैं उन्हें आशीर्वाद दो। उन्हें शाप मत दो, आशीर्वाद दो।
15 जो प्रसन्न हैं उनके साथ प्रसन्न रहो। जो दुःखी है, उनके दुःख में दुःखी
होओ।
16 मेलमिलाप से रहो। अभिमान मत करो बल्कि दीनों की संगति करो। अपने
को बुद्धिमान मत समझो।
17 बुराई का बदला बुराई से किसी को मत दो। सभी लोगों की आँखों में जो
अच्छा हो उसे ही करने की सोचो।
18 जहाँ तक बन पड़े सब मनुष्यों के साथ शान्ति से रहो।
19 किसी से अपने आप बदला मत लो। मेरे मित्रों, बल्कि इसे परमेश्वर के क्रोध
पर छोड़ दो क्योंकि शास्त्र में लिखा है: "प्रभु ने कहा है बदला लेना मेरा काम है।
प्रतिदान मैं दूँगा।"✡
20 बल्कि तू तो

"यदि तेरा शत्रु भूखा है
तो उसे भोजन करा।
यदि वह प्यासा है
तो उसे पीने को दे।
क्योंकि यदि तू ऐसा करता है तो वह तुझसे शर्मिन्दा होगा।" नीति. *25:21-22*

21 बुराई से मत हार बल्कि अपनी नेकी से बुराई को हरा दे।

13

शासक की आज्ञा मानो

1 हर व्यक्ति को प्रधान सत्ता की अधीनता स्वीकार करना चाहिए। क्योंकि
शासन का अधिकार परमेश्वर की ओर से है। और जो अधिकार मौजूद है उन्हें
परमेश्वर ने नियुक्त किया है।
2 इसलिए जो सत्ता का विरोध करता है, वह परमेश्वर की आज्ञा का विरोध
करता है। और जो परमेश्वर की आज्ञा का विरोध करते हैं, वे दण्ड पायेंगे।

✡ **12:19:** □□□□□□ □□□□□□□□ 32:35

3 अब देखो कोई शासक, उस व्यक्ति को, जो नेकी करता है, नहीं डराता बल्कि
उसी को डराता है, जो बुरे काम करता है। यदि तुम सत्ता से नहीं डरना चाहते हो,
तो भले काम करते रहो। तुम्हें सत्ता की प्रशंसा मिलेगी।
4 जो सत्ता में है वह परमेश्वर का सेवक है वह तेरा भला करने के लिये है।
किन्तु यदि तू बुरा करता है तो उससे डर क्योंकि उसकी तलवार बेकार नहीं है।
वह परमेश्वर का सेवक है जो बुरा काम करने वालों पर परमेश्वर का क्रोध लाता
है।
5 इसलिए समर्पण आवश्यक है। न केवल डर के कारण बल्कि तुम्हारी अपनी
चेतना के कारण।
6 इसलिए तो तुम लोग कर भी चुकाते हो क्योंकि अधिकारी परमेश्वर के सेवक
हैं जो अपने कर्तव्यों को ही पूरा करने में लगे रहते हैं।
7 जिस किसी का तुझे देना है, उसे चुका दे। जो कर तुझे देना है, उसे दे। जिसकी
चूँगी तुझ पर निकलती है, उसे चूँगी दे। जिससे तुझे डरना चाहिए तू उससे डर।
जिसका आदर करना चाहिए उसका आदर कर।

प्रेम ही विधान है

8 आपसी प्रेम के अलावा किसी का ऋण अपने ऊपर मत रख क्योंकि जो अपने
साथियों से प्रेम करता है, वह इस प्रकार व्यवस्था को ही पूरा करता है।
9 मैं यह इसलिए कह रहा हूँ, "व्यभिचार मत कर, हत्या मत कर, चोरी मत
कर, लालच मत रख।"✡ और जो भी दूसरी व्यवस्थाएँ हो सकती हैं, इस वचन
में समा जाती हैं, "तुझे अपने साथी को ऐसे ही प्यार करना चाहिए, जैसे तू अपने
आप को करता है।"✡
10 प्रेम अपने साथी का बुरा कभी नहीं करता। इसलिए प्रेम करना व्यवस्था के
विधान को पूरा करना है।
11 यह सब कुछ तुम इसलिए करो कि जैसे समय में तुम रह रहे हो, उसे जानते
हो। तुम जानते हो कि तुम्हारे लिए अपनी नींद से जागने का समय आ पहुँचा है,
क्योंकि जब हमने विश्वास धारण किया था हमारा उद्धार अब उससे अधिक निकट
है।

✡ **13:9:** □□□□□□ □□□□□□□ 20:13-15, 17 ✡ **13:9:** □□□□□□ □□□□□ 19:18

12 "रात" लगभग पूरी हो चुकी है, "दिन" पास ही है, इसलिए आओ हम उन
कर्मों से छुटकारा पा लें जो अँधकार के हैं। आओ हम प्रकाश के अस्त्रों को धारण
करें।
13 इसलिए हम वैसे ही उत्तम रीति से रहें जैसे दिन के समय रहते हैं। बहुत अधिक
दावतों में जाते हुए खा पीकर धुत्त न हो जाओ। लुच्चेपन दुराचार व्यभिचार में न
पड़ें। न झगड़ें और न ही डाह रखें।
14 बल्कि प्रभु यीशु मसीह को धारण करें। और अपनी मानव देह की इच्छाओं
को पूरा करने में ही मत लगे रहो।

14

दूसरों में दोष मत निकाल

1 जिसका विश्वास दुर्बल है, उसका भी स्वागत करो किन्तु मतभेदों पर झगड़ा
करने के लिए नहीं।
2 कोई मानता है कि वह सब कुछ खा सकता है, किन्तु कोई दुर्बल व्यक्ति बस
साग-पात ही खाता है।
3 तो वह जो हर तरह का खाना खाता है, उसे उस व्यक्ति को हीन नहीं समझना
चाहिए जो कुछ वस्तुएँ नहीं खाता। वैसे ही वह जो कुछ वस्तुएँ नहीं खाता है, उसे
सब कुछ खाने वाले को बुरा नहीं कहना चाहिए। क्योंकि परमेश्वर ने उसे अपना
लिया है।
4 तू किसी दूसरे घर के दास पर दोष लगाने वाला कौन होता है? उसका
अनुमोदन या उसे अनुचित ठहराना स्वामी पर ही निर्भर करता है। वह अवलम्बित
रहेगा क्योंकि उसे प्रभु ने अवलम्बित होकर टिके रहने की शक्ति दी।
5 और फिर कोई किसी एक दिन को सब दिनों से श्रेष्ठ मानता है और दूसरा
उसे सब दिनों के बराबर मानता है तो हर किसी को पूरी तरह अपनी बुद्धि की बात
माननी चाहिए।
6 जो किसी विशेष दिन को मनाता है वह उसे प्रभु को आदर देने के लिए ही
मनाता है। और जो सब कुछ खाता है वह भी प्रभु को आदर देने के लिये ही खाता
है। क्योंकि वह परमेश्वर का धन्यवाद करता है। और जो किन्ही वस्तुओं को नहीं
खाता, वह भी ऐसा इसलिए करता है क्योंकि वह भी प्रभु को आदर देना चाहता
है। वह भी परमेश्वर को ही धन्यवाद देता है।

7 हम में से कोई भी न तो अपने लिए जीता है, और न अपने लिये मरता है।
8 हम जीते हैं तो प्रभु के लिए और यदि मरते है तो भी प्रभु के लिए। सो चाहे
हम जियें चाहे मरें हम है तो प्रभु के ही।
9 इसलिए मसीह मरा; और इसलिए जी उठा ताकि वह, वे जो अब मर चुके हैं
और वे जो अभी जीवित हैं, दोनों का प्रभु हो सके।
10 सो तू अपने विश्वास में सशक्त भाईपर दोष क्यों लगाता है? या तू अपने
विश्वास में निर्बल भाई को हीन क्यों मानता है? हम सभी को परमेश्वर के न्याय
के सिंहासन के आगे खड़ा होना है।
11 शास्त्र में लिखा है:

"प्रभु ने कहा है, 'मेरे जीवन की शपथ'
'हर किसी को मेरे सामने घुटने टेकने होंगे;
और हर जुबान परमेश्वर को पहचानेगी।' " यशायाह *45:23*

12 सो हममें से हर एक को परमेश्वर के आगे अपना लेखा-जोखा देना होगा।

पाप के लिए प्रेरित मत कर

13 सो हम आपस में दोष लगाना बंद करें और यह निश्चय करें कि अपने भाई के
रास्ते में हम कोई अड़चन खड़ी नहीं करेंगे और न ही उसे पाप के लिये उकसायेंगे।
14 प्रभु यीशु में आस्थावान होने के कारण मैं मानता हूँ कि अपने आप में कोई
भोजन अपवित्र नहीं है। वह केवल उसके लिए अपवित्र हैं, जो उसे अपवित्र मानता
हैं, उसके लिए उसका खाना अनुचित है।
15 यदि तेरे भाई को तेरे भोजन से ठेस पहुँचती है तो तू वास्तव में प्यार का
व्यवहार नहीं कर रहा। तो तू अपने भोजन से उसे ठेस मत पहुँचा क्योंकि मसीह ने
उस तक के लिए भी अपने प्राण तजे।
16 सो जो तेरे लिए अच्छा है उसे निन्दनीय मत बनने दे।
17 क्योंकि परमेश्वर का राज्य बस खाना-पीना नहीं है बल्कि वह तो धार्मिकता
है, शांति है और पवित्र आत्मा से प्राप्त आनन्द है।
18 जो मसीह की इस तरह सेवा करता है, उससे परमेश्वर प्रसन्न रहता है और
लोग उसे सम्मान देते हैं।

19 इसलिए, उन बातों में लगें जो शांति को बढ़ाती हैं और जिनसे एक दूसरे को
आत्मिक बढ़ोतरी में सहायता मिलती है।
20 भोजन के लिये परमेश्वर के काम को मत बिगाड़ो। हर तरह का भोजन पवित्र
है किन्तु किसी भी व्यक्ति के लिये वह कुछ भी खाना ठीक नहीं है जो किसी और
भाई को पाप के रास्ते पर ले जाये।
21 माँस नहीं खाना श्रेष्ठ है, शराब नहीं पीना अच्छा है और कुछ भी ऐसा नहीं
करना उत्तम है जो तेरे भाई को पाप में ढकेलता हो।
22 अपने विश्वास को परमेश्वर और अपने बीच ही रख। वह धन्य है जो जिसे
उत्तम समझता है, उसके लिए अपने को दोषी नहीं पाता।
23 किन्तु यदि कोई ऐसी वस्तु को खाता है, जिसके खाने के प्रति वह आश्वस्त
नहीं है तो वह दोषी ठहरता है। क्योंकि उसका खाना उसके विश्वास के अनुसार
नहीं है और वह सब कुछ जो विश्वास पर नहीं टिका है, पाप है।

15

1 हम जो आत्मिक रूप से शक्तिशाली हैं, उन्हें उनकी दुर्बलता सहनी चाहिये
जो शक्तिशाली नहीं हैं। हम बस अपने आपको ही प्रसन्न न करें।
2 हम में से हर एक, दूसरों की अच्छाइयों के लिए इस भावना के साथ कि
उनकी आत्मिक बढ़ोतरी हो, उन्हें प्रसन्न करे।
3 यहाँ तक कि मसीह ने भी स्वयं को प्रसन्न नहीं किया था। बल्कि जैसा कि
मसीह के बारे में शास्त्र कहता है: "उनका अपमान जिन्होंने तेरा अपमान किया है,
मुझ पर आ पड़ा है।"✡
4 हर वह बात जो शास्त्रों में पहले लिखी गयी, हमें शिक्षा देने के लिए थी ताकि
जो धीरज और बढ़ावा शास्त्रों से मिलता है, हम उससे आशा प्राप्त करें।
5 और समूचे धीरज और बढ़ावे का स्रोत परमेश्वर तुम्हें वरदान दे कि तुम लोग
एक दूसरे के साथ यीशु मसीह के उदाहरण पर चलते हुए आपस में मिल जुल कर
रहो।
6 ताकि तुम सब एक साथ एक स्वर से हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमपिता,
परमेश्वर को महिमा प्रदान करो।
7 इसलिए एक दूसरे को अपनाओ जैसे तुम्हें मसीह ने अपनाया। यह परमेश्वर
की महिमा के लिए करो।

✡ **15:3:** □□□□□□ □□□ 69:9

8 मैं तुम लोगों को बताता हूँ कि यह प्रकट करने को कि परमेश्वर विश्वसनीय
है उनके पुरखों को दिये गए परमेश्वर के वचन को दृढ़ करने को मसीह यहूदियों
का सेवक बना।
9 ताकि ग़ैर यहूदी लोग भी परमेश्वर को उसकी करुणा के लिए महिमा प्रदान
करें। शास्त्र कहता है:

"इसलिये ग़ैर यहूदियों के बीच
तुझे पहचानूँगा और तेरे नाम की महिमा गाऊँगा।" भजन संहिता *18:49*

10 और यह भी कहा गया है,

"हे ग़ैर यहूदियो, परमेश्वर के चुने हुए लोगों के साथ प्रसन्न रहो।" व्यवस्था
विवरण *32:43*

11 और फिर शास्त्र यह भी कहता है,

"हे ग़ैर यहूदी लोगो, तुम प्रभु की स्तुति करो।
और सभी जातियो, परमेश्वर की स्तुति करो।" भजन संहिता *117:1*

12 और फिर यशायाह भी कहता है,

"यिशै का एक वंशज प्रकट होगा
जो ग़ैर यहूदियों के शासक के रूप में उभरेगा।
ग़ैर यहूदी उस पर अपनी आशा लगाएँगे।" यशायाह *11:10*

13 सभी आशाओं का स्रोत परमेश्वर, तुम्हें सम्पूर्ण आनन्द और शांति से भर दे
जैसा कि उसमें तुम्हारा विश्वास है। ताकि पवित्र आत्मा की शक्ति से तुम आशा से
भरपूर हो जाओ।

पौलुस द्वारा अपने पत्र और कामों की चर्चा

14 हे मेरे भाईयों, मुझे स्वयं तुम पर भरोसा है कि तुम नेकी से भरे हो और ज्ञान
से परिपूर्ण हो। तुम एक दूसरे को शिक्षा दे सकते हो।

15 किन्तु तुम्हें फिर से याद दिलाने के लिये मैंने कुछ विषयों के बारे में साफ
साफ लिखा है। मैंने परमेश्वर का जो अनुग्रह मुझे मिला है, उसके कारण यह किया
है।
16 यानी मैं ग़ैर यहूदियों के लिए यीशु मसीह का सेवक बन कर परमेश्वर के
सुसमाचार के लिए एक याजक के रूप में काम करूँ ताकि ग़ैर यहूदी परमेश्वर के
आगे स्वीकार करने योग्य भेंट बन सकें और पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर के लिये
पूरी तरह पवित्र बनें।
17 सो मसीह यीशु में एक व्यक्ति के रूप में परमेश्वर के प्रति अपनी सेवा का
मुझे गर्व है।
18 क्योंकि मैं बस उन्हीं बातों को कहने का साहस रखता हूँ जिन्हें मसीह ने
ग़ैर यहूदियों को परमेश्वर की आज्ञा मानने का रास्ता दिखाने का काम मेरे वचनों,
मेरे कर्मों,
19 आश्चर्य चिन्हों और अद्भुत कामों की शक्ति और परमेश्वर की आत्मा के
सामर्थ्य से, मेरे द्वारा पूरा किया। सो यरूशलेम से लेकर इल्लुरिकुम के चारों ओर
मसीह के सुसमाचार के उपदेश का काम मैंने पूरा किया।
20 मेरे मन में सदा यह अभिलाषा रही है कि मैं सुसमाचार का उपदेश वहाँ दूँ
जहाँ कोई मसीह का नाम तक नहीं जानता, ताकि मैं किसी दूसरे व्यक्ति की नींव
पर निर्माण न करूँ।
21 किन्तु शास्त्र कहता है:

"जिन्हें उसके बारे में नहीं बताया गया है, वे उसे देखेंगे।
और जिन्होंने सुना तक नहीं है, वे समझेगें।" यशायाह *52:15*

पौलुस की रोम जाने की योजना

22 मेरे ये कर्तव्य मुझे तुम्हारे पास आने से बार बार रोकते रहे हैं।
23 किन्तु क्योंकि अब इन प्रदेशों में कोई स्थान नहीं बचा है और बहुत बरसों
से मैं तुमसे मिलना चाहता रहा हूँ,
24 सो मैं जब इसपानिया जाऊँगा तो आशा करता हूँ तुमसे मिलूँगा! मुझे उम्मीद
है कि इसपानिया जाते हुए तुमसे भेंट होगी। तुम्हारे साथ कुछ दिन ठहरने का आनन्द
लेने के बाद मुझे आशा है कि वहाँ की यात्रा के लिए मुझे तुम्हारी मदद मिलेगी।

25 किन्तु अब मैं परमेश्वर के पवित्र जनों की सेवा में यरूशलेम जा रहा हूँ।
26 क्योंकि मकिदुनिया और अखैया के कलीसिया के लोगों ने यरूशलेम में
परमेश्वर के पवित्र जनों में जो दरिद्र हैं, उनके लिए कुछ देने का निश्चय किया है।
27 हाँ, उनके प्रति उनका कर्तव्य भी बनता है क्योंकि यदि ग़ैर यहूदियों ने
यहूदियों के आध्यात्मिक कार्यों में हिस्सा बटाया है तो ग़ैर यहूदियों को भी उनके
लिये भौतिक सुख जुटाने चाहिये।
28 सो अपना यह काम पूरा करके और इकट्ठा किये गये इस धन को सुरक्षा के
साथ उनके हाथों सौंप कर मैं तुम्हारे नगर से होता हुआ इसपानिया के लिये रवाना
होऊँगा
29 और मैं जानता हूँ कि जब मैं तुम्हारे पास आऊँगा तो तुम्हारे लिए मसीह के
पूरे आशीर्वादों समेत आऊँगा।
30 हे भाईयों, तुमसे मैं प्रभु यीशु मसीह की ओर से आतमा से जो प्रेम पाते हैं,
उसकी साक्षी दे कर प्रार्थना करता हूँ कि तुम मेरी ओर से परमेश्वर के प्रति सच्ची
प्रार्थनाओं में मेरा साथ दो
31 कि मैं यहूदियों में अविश्वासियों से बचा रहूँ और यरूशलेम के प्रति मेरी
सेवा को परमेश्वर के पवित्र जन स्वीकार करें।
32 ताकि परमेश्वर की इच्छा के अनुसार मैं प्रसन्नता के साथ तुम्हारे पास आकर
तुम्हारे साथ आनन्द मना सकूँ।
33 सम्पूर्ण शांति का धाम परमेश्वर तुम्हारे साथ रहे। आमीन।

16

रोम के मसीहियों को पौलूस का संदेश

1 मैं किंख्रिया की कलीसिया की विशेष सेविका हमारी बहन फ़ीबे की तुम से
सिफारिश करता हूँ
2 कि तुम उसे प्रभु में ऐसी रीति से ग्रहण करो जैसी रीति परमेश्वर के लोगों
के योग्य है। उसे तुमसे जो कुछ अपेक्षित हो सब कुछ से तुम उसकी मदद करना
क्योंकि वह मुझे समेत बहुतों की सहायक रही है।

3 प्रिस्का और अक्किला को मेरा नमस्कार। वे यीशु मसीह में मेरे सहकर्मी हैं।

4 उन्होंने मेरे प्राण बचाने के लिये अपने जीवन को भी दाव पर लगा दिया था।
न केवल मैं उनका धन्यवाद करता हूँ बल्कि ग़ैर यहूदियों की सभी कलीसिया भी
उनके धन्यवादी हैं।
5 उस कलीसिया को भी मेरा नमस्कार जो उनके घर में एकत्र होती है।
मेरे प्रिय मित्र इपनितुस को मेरा नमस्कार जो एशिया में मसीह को अपनाने वालों
में पहला है।
6 मरियम को, जिसने तुम्हारे लिये बहुत काम किया है नमस्कार।
7 मेरे कुटुम्बी अन्द्रनीकुस और यूनियास को, जो मेरे साथ कारागार में थे और
जो प्रमुख धर्म-प्रचारकों में प्रसिद्ध हैं, और जो मुझ से भी पहले मसीह में थे,
मेरा नमस्कार।
8 प्रभु में मेरे प्रिय मित्र अम्पलियातुस को नमस्कार।
9 मसीह में हमारे सहकर्मी उरबानुस तथा
मेरे प्रिय मित्र इस्तुखुस को नमस्कार।
10 मसीह में खरे और सच्चे अपिल्लेस को नमस्कार।
अरिस्तुबुलुस के परिवार को नमस्कार।
11 यहूदी साथी हिरोदियोन को नमस्कार।
नरकिस्सुस के परिवार के उन लोगों को नमस्कार जो प्रभु में हैं।
12 त्रुफेना और त्रुफोसा को जो प्रभु में परिश्रमी कार्यकर्ता हैं, नमस्कार।
मेरी प्रिया परसिस को, जिसने प्रभु में कठिन परिश्रम किया है, मेरा नमस्कार।
13 प्रभु के असाधारण सेवक रूफुस को और उसकी माँ को, जो मेरी भी माँ रही
है, नमस्कार।
14 असुंक्रितुस, फिलगोन, हिर्मेस, पत्रुबास, हिर्मोस और उनके साथी बंधुओं को
नमस्कार।
15 फिलुलुगुस, यूलिया, नेर्युस तथा उसकी बहन उलुम्पास और उनके सभी
साथी संतों को नमस्कार।
16 तुम लोग पवित्र चुंबन द्वारा एक दूसरे का स्वागत करो।
तुम्हें सभी मसीही कलीसियों की ओर से नमस्कार।

17 हे भाइयो, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुमने जो शिक्षा पाई हैं, उसके विपरीत
तुममें जो फूट डालते हैं और दूसरों के विश्वास को बिगाड़ते हैं, उनसे सावधान रहो,
और उनसे दूर रहो।

18 क्योंकि ये लोग हमारे प्रभु यीशु मसीह की नहीं बल्कि अपने पेट की
उपासना करते हैं। और उपनी खुशामद भरी चिकनी चुपड़ी बातों से भोले भाले
लोगों के हृदय को छलते हैं।
19 तुम्हारी आज्ञाकारिता की चर्चा बाहर हर किसी तक पहुँच चुकी है। इसलिये
तुमसे मैं बहुत प्रसन्न हूँ। किन्तु मैं चाहता हूँ कि तुम नेकी के लिये बुद्धिमान बने रहो
और बुराई के लिये अबोध रहो।
20 शांति का स्रोत परमेश्वर शीघ्र ही शैतान को तुम्हारे पैरों तले कुचल देगा।
हमारे प्रभु यीशु मसीह का तुम पर अनुग्रह हो।
21 हमारे साथी कार्यकर्ता तीमुथियुस और मेरे यहूदी साथी लूकियुस, यासोन
तथा सोसिपत्रुस की ओर से तुम्हें नमस्कार।
22 इस पत्र के लेखक मुझ तिरतियुस का प्रभु में तुम्हें नमस्कार।
23 मेरे और समूची कलीसिया के आतिथ्यकर्ता गयुस का तुम्हें नमस्कार।
इरास्तुस जो नगर का खजांची है और हमारे बन्धुक्वारतुस का तुम को नमस्कार।
24 *
25 उसकी महिमा हो जो तुम्हारे विश्वास के अनुसार यानी यीशु मसीह के सन्देश
के जिस सुसमाचार का मैं उपदेश देता हूँ उसके अनुसार तुम्हें सुदृढ बनाने में समर्थ
है। परमेश्वर का यह रहस्यपूर्ण सत्य युगयुगान्तर से छिपा हुआ था।
26 किन्तु जिसे अनन्त परमेश्वर के आदेश से भविष्यवक्ताओं के लेखों द्वारा
अब हमें और ग़ैर यहूदियों को प्रकट करके बता दिया गया है जिससे विश्वास से
पैदा होने वाली आज्ञाकारिता पैदा हो।
27 यीशु मसीह द्वारा उस एक मात्र ज्ञानमय परमेश्वर की अनन्त काल तक महिमा
हो। आमीन!

---

* **16:24:** □□□ □□□□□□ □□□□□□□□□ □□□ □□ 24 जोड़ा गया है: "हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम सबके साथ रहे। आमीन।"

पवित्र बाइबल

The Holy Bible, Easy Reading Version, in Hindi

copyright © 1992-2010 World Bible Translation Center

Language: हिंदी (Hindi)

Translation by: World Bible Translation Center

License Agreement for Bible Texts World Bible Translation Center Last Updated: September 21, 2006 Copyright © 2006 by World Bible Translation Center All rights reserved. These Scriptures: • Are copyrighted by World Bible Translation Center. • Are not public domain. • May not be altered or modified in any form. • May not be sold or offered for sale in any form. • May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space). • May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included. • May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSIONTM © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSIONTM." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read VersionTM in English) must appear at the end of each quotation. Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com. World Bible Translation Center P.O. Box 820648 Fort Worth, Texas 76182, USA Telephone: 1-817-595-1664 Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE E-mail: info@wbtc.com WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: http://www.wbtc.org

2019-11-15

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 18 Apr 2025 from source files dated 13 Dec 2023
7f0fcd5b-bc85-55f6-933a-0de82e7ef275